सफलता की कहानी किसान की जुबानी

मैं, त्रिलोक चन्द्र शर्मा, गॉव सोंगरा, विकास खण्ड जवॉ, तहसील कोल, जिला अलीगढ़ का रहने वाला हूॅ, मेरी शैक्षिक योग्यता बी0एस0सी0 है, मेरे पास 2.50 हे0 खेती की जमीन है, मैने क्वार्सी फार्म अलीगढ़ में परियोजना कार्यक्रमों के बारे में कृषि यन्त्र वितरण कार्यक्रम एवं गोष्ठी में शामिल हुआ था, जिसमें वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार डास्प योजना में स्ट्रा रीपर मशीन अनुदान पर क्रय करने हेतु आवेदन पत्र जमा किया गया, मेरे आवेदन पत्र के पंजीकरण एवं स्वीकृति का सन्देश मोबाइल के माध्यम से मिलने के बाद मैने स्ट्रारीपर मशीन रुपया 245000.00 में क्रय की ।

जिससे मैंने 10 अप्रैल 2016 से कम्बाइन मशीन द्वारा गेंहू कटाई कराने वाले कृषकों के खेतों का भूसा रुपया 1000/ ट्राली की दर से बनाना शुरु किया और 12 मई तक 250 ट्राली भूसा तैयार करने से मुझे रुपया 250000.00 की आमदनी हुई, तथा रुपया 44000.0 रीपर के अनुदान के मेरे बैंक खाते में प्राप्त हुए, जितना पैसा मैने रीपर के क्रय पर लगाया था, वह पूरा का पूरा मुझे इसी वर्ष एक सीजन में भूसा बनाने से मिल गया जिसमें से रुपया 105000.00 का परिचालन व्यय काटने के उपरान्त रुपया 145000.00 का लाभ हुआ। वास्तव में किसान भाइयों के लिए यह एक बहुत ही उपयोगी मशीन है, कम्बाइन से गेंहूॅ कटाई के बाद किसान भाई खेतों में अवशेष खडें गेंहूॅ के तनों (लॉक) में आग लगा देते थे, जो कि अब ऐसा नहीं कर रहे हैं जिससे वातावरण में प्रदूषण कम हो रहा है एवं खेतो में फसलों के अवशेष मिटटी में दबने से कृषि भूमि में जीवांश की भी वृद्वि होगी जिससे किसानों का लाभ भी बढेगा।

कृषक का नाम :– त्रिलाक चन्द्र शर्मा

पिता का नाम :– स्व0 रामफल शर्मा

ग्राम का नाम :– सोंगरा

विकास खण्ड :– जवॉ

तहसील :– कोल

जनपद :– अलीगढ़।

मोबाइल संख्या :– 8755169113

सफलता की कहानी किसान की जुबानी

मै दीपक तिवारी, गॉव नदरोई, ब्लाक लोधा, जि0 अलीगढ़ का कृषक हुॅ, मेरे पास लगभग खेती की 2.0 एकड जमीन है, सिंचाई का साधन विद्युत नलकूप है मेरी खेती की जमीन कम होने के कारण मुझे उचित लाभ खेती से नहीं मिल पा रहा था यूपीडास्प योजना की जानकारी समाचार पत्रों एंव गोष्ठियों सें मिलने पर मैं यूपी डास्प योजना से जुड़ा। मुझे गेहूॅ का भूसा बनाने वाली स्ट्रारीपर मशीन की अनुदान पर मिलने के बारे में जानकारी मिली। रीपर मशीन मेरी समझ में आयी, अच्छी लगी। मैंने यूपीडास्प कार्यालय से जानकारी कर अपना स्ट्रारीपर का आवेदन पत्र पूर्णकर चाहे गहे कागजात लगाकर कार्यालय में जमा कर दिया। कुछ समय बाद मेरे मोबाईल पर पंजीकरण का मैसेज आया और बाद में मुझे रीपर मशीन की अनुदान पर क्रय करने हेतु मन्जूरी की जानकारी मिली। इसके बाद मैंने स्ट्रारीपर मशीन 232000/—रू0 मे खरीदी जिसका सत्यापन कृषक गोष्ठी कृष्णांजली अलीगढ़ में अधिकारियां एवं मा0 मंत्री जी के द्वारा किया गया। मैंने कम्बाइन मशीन से गेहूॅ कटाई के खेतो में भूसा बनाने का काम शुरू किया। एक ट्राली भूसा बनाई 800 रूपये की दर से भूसा बनाना शुरू किया। भूसा बनाने से लगभाग 150000.00/ रूपये की आमदनी हुई जिसमें से 60000 से 62000 रूपये के करीब मशीन को चलाने में डीजल एंव परिचालन व्यय तथा मजदूरी का खर्च आया जिसे घटाने के बाद मुझे लगभाग 90000/— रूपये का मुनाफा मिला। मुझे 44000/— हजार रूपये का अनुदान यूपीडास्प योजना से मेरे बैंक खाते में भी मिला। मेरे जैसे युवा कृषकों हेतु अपना कार्य करने एवं दूसरे कृषकों का कार्य करने हेतु यह बहुत अच्छी मशीन है। रीपर मशीन से कार्य कर थोड़े समय में उचित और अच्छी आमदनी की जा सकती है। रीपर मशीन के भूसा बनाने की गुणवत्ता अच्छी है जिसको किसानों द्वारा पसन्द किया जा रहा है। स्ट्रारीपर मशीन से बने भूसे को पशु भी बड़े चाव से खाते हैं।

कृषक का नाम :— दीपक तिवारी

पिता का नाम :— ओम प्रकाश तिवारी

ग्राम का नाम :— नदरोई

विकास खण्ड :— लोधा

तहसील :— कोल

जनपद :— अलीगढ़।

मोबाइल संख्या :— 8273455855

सफलता की कहानी किसान की जुबानी

मैं (कृपाल सिंह) ने धान की फसल के स्थान पर खरीफ 2015 में उर्द की फसल बोयी, मुझे उर्द की फसल से 25 कु0 उत्पादन मिला जो मंण्डी में 9800 रू0 प्रति कु0 की दर से बेचा गया जिससे 245000/–रू की धनराशि प्राप्त हुई जब कि धान की फसल से पूर्व में 40 क0 प्रति हे0 के उत्पादन से 2 हे0 में 80 कु0 पैदावार होती थी यह मण्डी में 1800 रूपये प्रति कु0 के हिसाब सें बिकने पर 144000/–रूपये की धनराशि प्राप्त हुई थी, जिसका बीज व जैव उर्वरक, ट्राइकोडरमा, पैण्डीमेथिलीन योजना द्वारा उपलब्ध कराया गया, इस तरह डास्प योजना के अन्तर्गत खेती करने से 88500/–रूपये उर्द की फसल से अधिक प्राप्त हुआ जब की धान की फसल पर खर्च की धनराशि 44000/– रूपये प्रति 2 हे0 वहीं उर्द फसल के उत्पादन पर प्रति 2.0 हे0 पर 29000/– हजार रूपये खर्च किया गया इस प्रकार धान की फसल से 100000.00 रूपये शुद्व लाभ प्राप्त हुआ, जबकि उर्द की फसल से 203500/–रूपये का शुद्व लाभ प्राप्त हुआ इस प्रकार धान की फसल के स्थान पर उर्द की फसल लेने से दोगुना लाभ प्राप्त हुआ। इसके बाद डास्प योजना से पॉपलर पोधो का रोपण भी किया गया हैं। पौधे अच्छी प्रकार से चल रहे हैं इससे भी लाभ होने की उम्मीद है डास्प योजना से कृषि यन्त्र लेजर लेबलर अनुदान पर क्रय किया गया हैं जिससे मुझे एवं सभी गॉव वासियों को लाभ मिल रहा हैं जिससे मुझे अच्छी आमदनी भी हो रही हैं।

कृषक का नाम :–कृपाल सिंह

पिता का नाम :–मोहन सिंह

ग्राम का नाम :– बैजला

विकास खण्ड :– अतरोली

तहसील :– अतरोली

जनपद :– अलीगढ़।

मोबाइल संख्या :–9719128625

सफलता की कहानी किसान की जुबानी

मै (अफसर खॉ) डास्प योजना अलीगढ जिले में लागू होने से पहले अपने खेतो में धान की फसल लगाता था, डास्प योजना आने से सहायक विकास अधिकारी कृषि के समझाने पर मैंने अपने खेत में धान की फसल ना लगा कर उर्द की फसल की 1.5 हे0 क्षेत्रफल में बुवाई की जिसका बीज व जैव उर्वरक, ट्राइकोडरमा, पैण्डीमेथिलीन योजना द्वारा उपलब्ध कराया गया, और मुझे 18 कु0 उत्पादन प्राप्त हुआ जो मंण्डी में 9200/– रूपये प्रति कु0 बेचा गया जिससे मुझे 165600/– रूपया प्राप्त हुआ इस फसल को पैदा करने में 20000/–रूपये का खर्च आया। इस प्रकार 145600/–रूपये शुद्व लाभ प्राप्त हुआ। पूर्व में धान की फसल में 1.50 हे0 में 56.00 कु0 धान का उत्पादन होता था जिसे मण्डी में 1500/–रूपये प्रति कु0 बेचा गया। धान से कुल 84000/–रूपये प्राप्त हुआ। धान के उत्पादन में लगभग 28600/– रूपये खर्च हुआ इस फसल से 55800/– रूपये की शुद्व प्राप्ति हुई, जो उर्द फसल की अपेक्षा काफी कम हैं। मैंने डास्प योजना द्वारा दिये गये प्रशिक्षणों में जगह–जगह एंव बरेली, पंतनगर मेले से काफी अच्छी जानकारी प्राप्त की जिससे मुझे एवं मेरे गॉव के किसानो को काफी लाभ मिला है।

कृषक का नाम :– अफसर खां

पिता का नाम :– अलहदाद खा

ग्राम का नाम :– पनेहरा

विकास खण्ड :– अतरौली

तहसील :– अतरौली

जनपद :– अलीगढ़।

मोबाइल संख्या :–9690591690

सफलता की कहानी किसान की जुबानी

मै हीरेश कुमार शर्मा अपने खेत में पहले धान की फसल लेता था। मुझे डास्प योजना के बारे में अपर जिला कृषि अधिकारी श्री वी0के0 शर्मा जी द्वारा जानकारी मिली तथा कम पानी वाली फसलों का उत्पादन किये जाने के बारे में अवगत कराया गया तथा बताया गया कि धान के स्थान पर मूंग की खेती करने से अधिक लाभ होगा तथा लागत में भी कमी आयेगी और दलहन फसल के करने से मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा भी बढेगी, जिसके बाद मैंने धान के स्थान पर 1.0 हे0 क्षेत्रफल में मूंग की खेती की, जिसका बीज व जैव उर्वरक, ट्राइकोडरमा, पैण्डीमेथिलीन योजना द्वारा उपलब्ध कराया गया, उनसे प्राप्त जानकारी के अनुसार मूंग की फसल की बुआई 1.0 हे0 में की और धान की फसल1.0 हे0 में नहीं लगाई। मुझे मूंग की फसल से 1.0 हे0 में 11.5 कु0 उत्पादन प्राप्त हुआ और मण्डी में 8200/– रूपया प्रति कु0 की दर से बिका जिससे कुल 94300/–रू0 प्राप्त हुआ तथा कुल लागत 24000/– रू0 खर्चा हुआ। इस फसल से 70300/– रू0 शुद्व आय प्राप्त हुई। पूर्व में धान की फसल से कुल 38 कु0 उत्पादन प्राप्त हुआ। यह मण्डी में 1450/– रू0 प्रति कु0 के हिसाब से विक्री किया गया जिससे रुपया 55100/–प्राप्त हुआ धान की फसल पर रुपया 24000/–का ब्यय किया गया, इस प्रकार रुपया 31100/–की बचत प्राप्त हुई, इस प्रकार धान की फसल की अपेक्षा मूंग की फसल से रुपया 39200/– अधिक प्राप्त हुआ। मेरे लिए यह योजना काफी लाभकारी रही है। आज के समय में डास्प योजना कृषकों के लिए बहुत ही लाभदायक है, गॉव के अन्य कृषकों द्वारा इस वर्ष ज्यादा से ज्यादा दलहन की फसल उर्द व मूंग की खेती का विचार कर ज्यादा से ज्यादा कम पानी वाली फसलें अरहर, मक्का की खेती की जायेगी।

कृषक का नाम :– हीरेश कुमार शर्मा

पिता का नाम :– छत्रपाल शर्मा

ग्राम का नाम :– भरतरी

विकास खण्ड :– लोधा

तहसील :– कोल

जनपद :– अलीगढ़।

मोबाइल संख्या :–7078465117

सफलता की कहानी किसान की जुबानी

मैं तेजपाल सिंह, पुत्र श्री बृहम सिंह, निवासी ग्राम नंगला मुबारिक, विकासखण्ड जानसठ, जनपद मुजफ्फरनगर का रहने वाला हूँ। मैं गॉव में रहकर खेती करता हूॅ। हमारी मुख्य फसल गन्ना है। कुछ वर्षों से गन्ने की फसल का मूल्य अच्छा नहीं मिल रहा है और गन्ने की फसल में लागत भी अन्य फसलों से ज्यादा आ रही है और बाजार में कृषि रसायन भी नकली मिल रहे हैं जो किसान की लागत को बढ़ाते है। इस वर्ष मैं विकासखण्ड जानसठ में एक किसान गोष्ठी में गया, वहॉ पर कई कृषि वैज्ञानिक किसानों को नई–नई जानकारी दे रहे थे। जहॉ पर डास्प योजना के जिला परियोजना समन्वयक श्री अरविन्द कुमार गिरि जी ने भी किसानों को डास्प योजनान्तर्गत चल रही विभिन्न योजनाओं से अवगत कराया और किसानों को ज्यादा पानी चाहने वाली फसलों के स्थान पर कम पानी चाहने वाली फसलों को उगाने एवं जैविक खेती करने पर विशेष बल दिया। मैं श्री अरविन्द कुमार गिरि जी की बातों से काफी प्रभावित हुआ और उनसे विशेष रूप से सम्पर्क कर उर्द क्लस्टर गठन कर अपने खेत पर 0.80 हे0 में उर्द की फसल उगाई। मैंने श्री अरविन्द कुमार गिरि जी के अनुसार फसल पर किसी भी प्रकार का कृषि रसायन का प्रयोग नहीं किया। मैंने घर पर ही फसल को रोगों से बचाने के लिए गोमूत्र, लहसुन, लाल मिर्च, नीला थोथा, तम्बाकू, नीम के पत्ते आदि से एक मिश्रण तैयार कर उर्द की फसल में कुल तीन बार छिड़काव किया, जिसके प्रभाव से मेरी फसल में कोई बिमारी नहीं लगी और उत्पादन भी अच्छा हुआ। काफी किसानों ने मुझसे प्रभावित होकर जैविक खेती की जानकारी ली। श्री अरविन्द कुमार गिरि जी के मार्ग दर्शन और अपनी मेहनत से फसल को कम लागत से अधिक उत्पादन किया।

सफलता की कहानी, सुरेन्द्र कुमार की जुबानी

मेरा गांव विकास खण्ड साढौली कदीम जनपद सहारनपुर के अन्तर्गत आता है, जिसका नाम नुनीयारी है, यह जनपद मुख्यालय से 10 किमी0 की दूरी पर स्थित है, विकास खण्ड साढौली कदीम का भू–भाग जनपद सहारनपुर के अन्य विकास खण्डो की अपेक्षा खराब स्थिति में है, कृषि व यातायात की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ है, मेरे यहाँ अधिकांष कृषक धान की खेती करते है, जिससे पानी की खपत ज्यादा होती है, मेरे पास 4 हेक्टेयर कृषि भूमि है, जिसमें 1 हे० आम के बाग है, मैं कृषि कार्य के साथ–साथ उन्नत नस्ल के पशु भी पालता हूँ, जैसे देषी गाय, मुर्रा भैस, साहीवाल, एवं वर्मी कम्पोस्ट खाद उत्पादन भी करता हूँ।

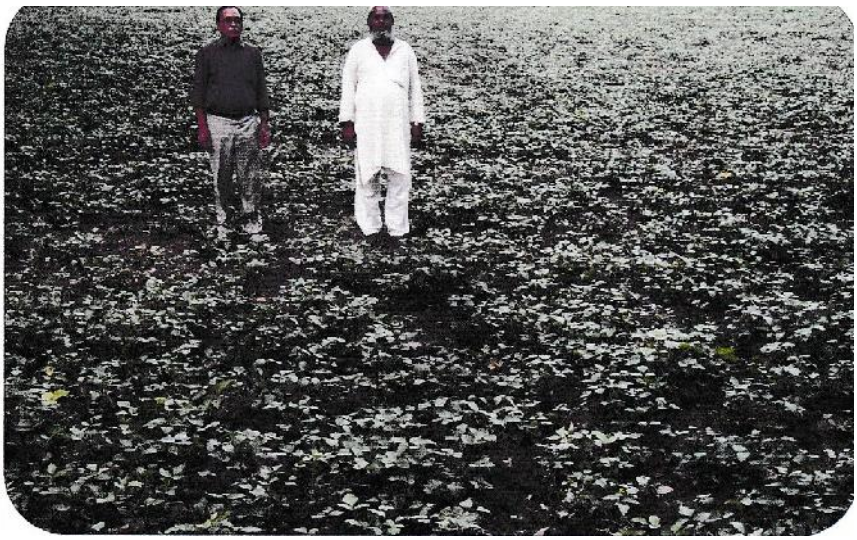

वर्ष 2014–15 से जनपद में क्रॉप डाईवर्सीफिकेषन योजना लागू हुई। मेरे जनपद में परियोजना के द्वारा कलस्टर प्रर्दषन के अन्तर्गत खरीफ–उर्द, पोपलर के कलस्टर प्रदर्षन कराये जा रहे थे, इसी बीच वर्ष 2015–16 में डॉस्प के जिला परियोजना समन्वयक से मुलाकात हुई, उनके द्वारा उनके द्वारा मुझे 1 हेक्टेयर में कलस्टर प्रदर्षन हेतु उर्द का बीज व अन्य निवेष जैसे सल्फर, राईजोबियम कल्चर, पी०एस०बी० कल्चर, खरपतवार नाषी, पेन्टामेन्थलीन दिया गया, मेरे द्वारा बुवाई के उपरान्त खरपतवार नाषी का प्रयोग करने से खेत में खरपतवार नही हुआ तथा फसल में समय पर कीट नासक का प्रयोग कर देने से बीमारी का प्रकोप भी नही आया, सही मात्रा में सल्फर का प्रयोग करने से उर्द का उत्पादन 13.75 कुन्तल 1 हे० में प्राप्त हुआ। साथ ही उसी खेत में लहसून जी–50 की खेती, लहसून+गन्ना, नर्सरी+प्याज के अलावा हल्दी, अदरक व

मसाले की खेती भी किया, इसी बीच मुझे प्रषिक्षण के दौरान कृषि वैज्ञानिको से मुलाकात हुई उनके द्वारा मुझे वर्मी कम्पोस्ट बनाने का प्रषिक्षण मिल गया, प्रषिक्षण के उपरान्त मैने 125 बैड वर्मी कम्पोस्ट बनाये जिससे मुझे 1150 कुन्तल वर्मी खाद तैयार हुआ अपने खेतो में प्रयोग करने के साथ–साथ लगभग 800 कुन्तल वर्मी खाद 350/– कुन्तल की दर से (50 किग्रा० के बैग की पैकिंग कर प्रति बैग 175/–) रू०280000/– का विक्रय किया इस प्रकार मुझे क्रॉप डाईवर्सीफिकेषन योजना के सम्पर्क में आने से उर्द में 1 हे० में प्राप्त 13.50 कुन्तल की कीमत रू० 168775/– प्राप्त हुई उसी के साथ–साथ मेरे अन्य खेतो में उद्यानिक खेती करने का प्रोत्साहन मिला तथा जैविक खेती से आय भी प्राप्त हुई। इस प्रकार जहाँ धान की फसल लगाकर मुझे निरन्तर पानी लगाने की चिन्ता लगी रहती थी, उससे मुक्ती मिली, तथा साथ ही मुझे आय में वृद्धि हुई एवं इन सभी कार्य में मेरे भाई बालेन्द्र कुमार तथा अन्य परिवार के सदस्यों को भी अपना कार्य मिला, हम सभी परिवार के लोग क्रॉप डाईवर्सीफिकेषन योजना के आभारी है इसी बीच मुझे ऐनाग्राम के निदेषक श्री जसवीर सिंह जी से भी प्रेरणा मिली विकास खण्ड स्तरीय गोष्ठी, फार्म स्कूल पर आयोजित प्रषिक्षण समूह क्षमता विकास आदि कार्यक्रमों में अपने व्याखान के दौरान उन्नत तकनीकी का प्रचार–प्रसार करते हुये मृदा स्वास्थय सुधारने कृषि में विविधकरण अपनाने तथा मृदा जल को सरक्षित करने हेतु प्रेरित करता हूँ मै वर्तमान में खुष हूँ। तथा परियोजना का आभारी हूँ।

सुरेन्द्र कुमार पुत्र श्री महिपाल सिंह
ग्राम नुनीयारी, विकास खण्ड साढौली कदीम
जनपद सहारनपुर।

सफलता की कहानी किसान की जुबानी

मै कृषक सत्येन्द्र मोहन सिंह, पुत्र श्री जण्डैल सिंह ग्राम जगन्नाथपुर, विकास खण्ड रामनगर जनपद बरेली का निवासी हूं, मेरे पास 2 (हेक्टेयर) उपजाऊ भूमि है, जिसमे मैं रबी मे गेहूं एवं खरीफ मे धान एवं गन्ना की खेती करता था।

क्राप डाईवर्सीफिकेशन परियोजना के बारे मे खण्ड विकास अधिकारी, रामनगर द्वारा जानकारी दी गयी तथा उर्द की खेती करने हेतु क्लस्टर निर्माण एवं अन्य जानकारी दी गयी। मैने यूपीडास्प कार्यालय विकास भवन मे जिला परियोजना समन्वयक, यूपीडास्प से सम्पर्क किया तथा मेरे द्वारा अपने गावं के 8 लोगों को मिलाकर 10 हे0 का एक क्लस्टर का निर्माण किया गया जिसमे मेरे द्वारा 1 हे0 मे उर्द की फसल लगायी गयी।

परियोजना की तरफ से प्राप्त उर्द बीज एवं अन्य निवेशों को मैंने परियोजनान्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको एवं अन्य विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षेणों एवं गोष्ठियों मे दी गयी जानकारी के आधार पर विस्तृत तकनीक के साथ उर्द फसल की खेती की गयी।

मेरे प्रक्षेत्र का भ्रमण डास्प योजना के जोनल अधिकारी एवं तकनीकी समन्वयक डा0 गजेन्द्र सिंह ने स्थलीय निरीक्षण किया तथा उन्होंने मेरी फसल को देखकर प्रसन्नता जाहिर की साथ ही साथ कई बहुत महत्वपूर्ण जानकारी भी दी जिसे प्रयोग मे लाकर मैंने और अधिक उपज प्राप्त की।

यूपीडास्प परियोजना द्वारा निःशुल्क बीज एवं बायो उर्वरक, खरपतवार नियंत्रण, उचित कीट नाशक आदि उपलब्ध कराया गया एवं परियोजना के अधिकारियों के उचित मार्गदर्शन से मेरा उत्पादन 11.20 कु0 प्रति हे0 की दर से उत्पादन प्राप्त हुआ।

डास्प मुख्यालय के तकनीकी समन्वयक डा0 गजेन्द्र सिंह एवं जिला परियोजना समन्वयक द्वारा प्रक्षेत्र का निरीक्षण करते हुये

01 हे0 उर्द एवं 01 हे0 धान की खेती का तुलनात्मक विवरण

क्र0 सं0	मद विवरण	उर्द 01 हे0 का लागत लाभ विवरण (रू0 में)	धान 01 हे0 का लागत लाभ विवरण (रू0 मे)
1	बीज	1940.00	3000.00
2	पेस्टीसाइड/अन्य दवायें	4000.00	4000.00
3	बायो पेस्टीसाइड	400.00	0.00
4	खाद एवं उर्वरक	2000.00	5000.00
5	खेत की तैयारी	900.00	3600.00
6	सिंचाई	2000.00	3000.00
7	मजदूरी	2500.00	4000.00
8	थ्रेसिंग	2000.00	3000.00
9	अन्य	1000.00	2000.00
अ	**कुल लागत**	**16740.00**	**26600.00**
ब	कुल उत्पादन	11.20 कुण्टल	55 कुण्टल
स	कुल उत्पादन मूल्य	11.20X10000=**112000-00**	55X1200=**66000-00**
द	**शुद्व लाभ प्रति हे0 (अ–स)**	**95260.00**	**39400.00**

इस प्रकार मुझे प्रति हे0 धान की खेती की अपेक्षा उर्द की खेती मे **95260.00–39400.00** = **Rs. 55860.00** का अतिरिक्त लाभ हुआ।

मैं इस उत्पादन एवं अपने लाभ का श्रेय क्राप डाईवर्सीफिकेशन परियोजनाा यूपीडास्प के जिला परियोजना समन्वयक एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको देता हूै।

धन्यवाद।

कृषक

सतेन्द्र मोहन सिंह
पुत्र श्री जण्डैल सिंह
ग्राम–जगन्नाथपुर
विकास खण्ड–रामनगर
जनपद–बरेली

2. जिला परियोजना समन्वयक, बरेली एवं कृषि वैज्ञानिक द्वारा कृषक प्रषिक्षण कार्यक्रम में कृषकों को उनके द्वारा चाही गई जानकारी का समाधान करते हुये।

1. जिला परियोजना समन्वयक, बरेली एवं खण्ड विकास अधिकारी द्वारा कृषकों को उर्द बीज एवं निवेश सामग्री वितरित करते हुये।

3. जिला परियोजना समन्वयक, बरेली एवं कृषि वैज्ञानिक द्वारा कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषकों को तकनीकी जानकारी देते हुये।

4. उर्द की बोई गई फसल में पीलापन रोग को दिखाते हुये कृषक।

5. मुख्य विकास अधिकरी, बरेली उर्द फसल के कलस्टर लीडर को एक–एक नैपसेक स्प्रेयर मशीन वितरित करते हुये।

क्रॉप डाइवर्सीफिकेशन परियोजना जनपद बुलन्दशहर

सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि वि0वि0 के तत्वाधान में आयोजित कृषि विज्ञान मेले में व्हीट् स्ट्रा चौपर के साथ यूपीडास्प लाभार्थी कृषक श्री हरमजन सिहॅ। साथ में खेत में तैयारी करता किसान।

भूसा से भरी ट्राली, प्रसन्न किसान एवं प्रदूषण मुक्त आधुनिक खेती

जनपद बुलन्दशहर एन0 सी0 आर0 में होने के कारण अलग पहचान रखता है। यहॉ कृषक आधुनिक कृषि वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग कर अधिक लाभ व रोजगार का सृजन करता है।

समस्या व बाधाएं :–

1. कम्बाईन के इस्तेमाल से फसल का काफी हिस्सा खेत में ही रह जाता है। यदि इसे जलाकर नष्ट किया जाता है भयानक वायु प्रदूषण होता है।

2. खेत में गलाने सड़ाने में अधिक समय व लागत आती है।

3. स्ट्रा का सद उपयोग कर पशु चारा में इसका प्रयोग के साथ पेपर मिल व अन्य स्थानों पर

इन्टरवेन्शन :–

- हमारे गॉव में कम्बाईन है जो प्रति वर्ष लगभग 250 हे0 क्षेत्रफल के गेहूँ की कटाई के साथ धान जौ आदि की
- कटाई करती है। खेत में छूटा स्ट्रा/पुवाल जिसे किसान जला देता है, वायु प्रदूषण का बड़ कारण है। कृषक गोष्ठियों
- में पता चला कि यूपीडास्प अन्तर्गत सी.डी.पी. प्रोग्राम में स्ट्रा चौपर पर 50 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। गॉव के दो कृषक मैं
- हरभजन सिहॅ ने श्री बल्कार सिहॅ पुत्र श्री अर्जुन सिहॅ के साथ दो स्ट्रा चौपर क्रय कर रु. 63,000.00 प्रति मशीन का डी0 बी0
- टी0 माध्यम से अनुदान प्राप्त किया। इसके अलावा चार ट्रेक्टर ट्राले, दो ट्रेक्टर हमारे थे। दो ट्रेक्टर किराये पर लिये गये।

गतिविधिः–

क्रम सं	मद	टिप्पणी
1	उद्देश्य	गेहूँ/धान आदि के अवशेषों को न जलाकर उसे पशुओं के खाने योग्य भूसा बनाना।
2	आवश्यक उपकरण	एक स्ट्रा चौपर, दो ट्रेक्टर, दो ट्रेक्टर ट्राले
3	ईकाई लागत	रु. 13 लाख (इसे कम करने के लिये किराये पर उपकरण लिये जा सकते हैं) एक हेक्टेयर क्षेत्रफल का भूसा बनाने में रु. 2,000.00 व्यय।

4	अवधि	अप्रैल से मई दो माह
5	आय	एक हेक्टेयर क्षेत्रफल का भूसा बनाने उसे ढुलान सहित रु. 5500.00।
6.	बचत	एक हेक्टेयर क्षेत्रफल का भूसा बनाने में बचत रु. 3500.00।
7	कुल बचत	दोनो किसानों ने 200 हे0 गेहूँ के खेतों से मशीन चलाकर 825 ट्राले भूसा तैयार कर उनके स्वामी द्वारा निर्धारित स्थान तक ढुलान सहित रु. 700 प्रति ट्राला कुल रु. 5,77,500.00 की बचत की।

क्रॉप डाइवर्सीफिकेशन परियोजना जनपद पीलीभीत

वर्ष 2015–16

लेजर लैण्ड लेबलर की सफलता की कहानी, कृषक की जुबानी

लाभार्थी का नाम – श्री इकबाल सिह

पिता का नाम – श्री जसवीर सिह

पता – ग्राम कबीरगजं विकास खण्ड पूरनपुर जिला पीलीभीत

मोबाइल नं0 – 9984405603

मैं अपने खेतों का प्रत्येक फसल के बाद समतलीकरण कराना चाहता था, परन्तु मेरे पास लगभग 3 लाख रुपये व्यय करने की व्यवस्था नही हो पा रही थी। इसी दौरान माह मई वर्ष 2015 में समाचार पत्र के माध्यम से यूपीडास्प द्वारा चलाई जा रही फसल विविधीकरण परियोजना के बारें में जानकारी प्राप्त हुई एवं इस परियोजना कृषकों को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में पीलीभीत कार्यालय जाकर जानकारी प्राप्त की। जानकारी प्राप्त करने के उपरान्त यूपीडास्प के बेबसाइट पर लेजर लैण्ड लेबलर अनुदान पर लेने हेतु ऑनलाईन पंजीकरण कराया तथा आवश्यक दस्तावेज कार्यालय में उपलब्ध करायें गये, उसके उपरान्त मेरा आवेदन पत्र स्वीकृत होने के उपरान्त मैने लेजर लैण्ड लेबलर अधिकृत विक्रेता से खरीद लिया एवं सत्यापन के उपरान्त कुछ ही समय में अनुदान की धनराशि रु0 1.50 लाख मेरे खाते में अंतरित की गयी। इस धनराशि के प्राप्त करने के उपरान्त बेहद आर्थिक एवं मानसिक संतुष्टि प्राप्त हुई।

समलीकरण हेतु लेजर लेबलर उपलब्ध होने के उपरान्त मैंने अपनी समस्त कृषि योग्य जमीन को लेबल किया जिस के कारण मेरे गन्ने की फसल के उत्पादन में 100 कुन्तल की बढोत्तरी हुई जिसके कारण एक ओर मुझे 25 हजार प्रति हें0 उत्पादन से आमदानी हुई, दूसरी फसल सिचांई लागत में 30–35 प्रतिशत कमी आयी, अर्थात् सिचांई मे कम लागत आने से आर्थिक बचत हुई। इसके अतिरिक्त लेबलर द्वारा समलीकरण करने से अति वर्शा होने की स्थिति सुचारु जल निकास होने के कारण उत्पादन पर विपरीत प्रभाव कम रहा। इसके साथ–2 जल ठहराव न होंने के कारण खरपतवार कम पनपे तथा विभिन्न प्रकार के रोगो एवं व्याधिया कम लग सकी। अपने कार्य के अतिरिक्त मैंने अन्य कृषको खेतो का समतलीकरण करके 1 वर्ष में लगभग 1.20 लाख की अतिरिक्त आय अर्जित की है। इस प्रकार मैं पहले से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए, अधिक आय अर्जित कर रहा हूँ जिससे मैं और मेरे परिवार का जीवन स्तर पूर्व की तुलना में बेहतर हो चुका है।

मैं सरकार का इस कार्य के लिए हमेशा आभारी रहूंगा।

इकबाल सिह, कबीरगजं, पीलीभीत